गाँव हृदयहीन नहीं होता

हृदयहीन
लोग नहीं होते,
पूरा गाँव नहीं होता।
ये तो होते हैं कुछ चालाक,
मतलबपरस्त,राजनीति के धूर्त,
जो अपनी खोपड़ी की योजनाओं
को देना चाहते हैं मूर्त रूप।
भले ही उसके लिए उजाड़ना पड़े
वहाँ की शांति,भाईचारा,
विश्वास और अटूट एकता,
जो है देश के हर गाँव की विशेषता।
गाँव, गाँव होता है,
जहाँ सरलता और निश्छलता स्वभाव
होती है।
विवादों का निबटारा भी
अक्सर भाईचारे से हो जाता है।
न्याय इतना भी कठोर नहीं होता
कि लोग स्तब्ध रह जाएँ,
और न्याय को ही अन्याय कह जाएँ।
कुछ लोगों की व्यक्तिगत हवस
जब पूरे गाँव पर हावी हो जाती है,
तब हर रहवासी तनाव में आ जाता।
पर इससे पूरे गाँव का चरित्र
कभी कलुषित नहीं हो जाता।
गाँव की आत्मा आज भी
आपसी प्रेम और विश्वास में बसती
है,
कुछ स्वार्थी चेहरों की काली छाया
पूरे गाँव की पहचान नहीं बनती है।
इसलिए दोष व्यक्तियों का लिखो,
गाँव की आत्मा को बदनाम मत
करो,
जहाँ अब भी रिश्तों की गर्माहट
जीवित है,
उसे हृदयहीन कहकर उसका सम्मान
मत खोओ।

राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

बुढ़ापे में पत्नी पर हाथ उठाने से बड़ा पाप कुछ नहीं

पत्नी कोई वस्तु नहीं,
जिस पर क्रोध उतारा जाए,
वह तो जीवन की अर्धांगिनी है,
जिसे हर पल सम्मान दिलाया
जाए।
जिस हाथ ने माँग सजाई,
उसी हाथ से मत चोट पहुँचाओ।
जिसने जीवन तुम्हें समर्पित
किया,
उसका विश्वास मत टूटने दो।
याद रखो–

शक्ति किसी को रुलाने में नहीं,
शक्ति किसी को अपनाने में है।
महानता हाथ उठाने में नहीं,
झुककर सम्मान निभाने में है।
बुढ़ापा प्रेम की अंतिम ऋतु है,
इसे हिंसा से कलंकित मत करो।
जीवनसाथी का हाथ थामो,
उसे आँसू नहीं, मुस्कान दो।
झुर्रियों से ढका हुआ चेहरा,
सफ़ेद हुए जब बाल,
तब क्यों रिश्तों पर पड़ जाए,

क्रोध और हिंसा का जाल?
जिसने जीवनभर साथ निभाया,
हर सुख-दुख में हाथ थामा,
उसी जीवनसंगिनी पर क्यों,
उठता है अपमान का तमाचा?

यदि जीवनभर की आदत रही,
तो वह गन्दे संस्कार की देन है।
जो प्रेम की भाषा भूल गया,
उसका अपना चरित्र दग़दार है।
यदि मन में अधिकार का नशा है,
और नियंत्रण की चाह बनी,
तो समझो प्रेम नहीं, केवल

अहंकार की दीवार ठानी है ।
यदि नशे ने विवेक हर लिया,
और इंसानियत खो बैठी,
तो दोष न उम्र का है इसमें,
गलती शिक्षा के राह की ठहरी।

बुढ़ापा तो वह समय है,
जब हाथ सहारे के लिए बढ़ते हैं,
न कि उसी हाथ से
अपने ही साथी के आँसू झरते हैं

ऊषा शुक्ला
इफको आंवला बरेली यूपी

कब उनको कहा नहीं अपना मैंने

मैं तो कह चुका हूँ कई दफा, वो मुझको गैर
ना समझे।
दिया इसका भी सबूत मैंने, मगर वो मेरे
जज्बात ना समझे।।
कब उनको कहा नहीं अपना मैंने।
कब उनको दिया नहीं आदर मैंने।।
कब तारीफ उनकी नहीं की मैंने।
कब उनको किया नहीं याद मैंने।।(याद
मैंने)
कब उनको कहा----------।।
पूछते हैं दुनिया वाले यह मुझसे।
आते क्यों नहीं वो मिलने मुझसे।।
क्या उनको नहीं मुझसे प्यार कुछ भी।
क्या आती नहीं है मेरी याद कुछ भी।।(मेरी
याद कुछ भी)
कब उनको कहा----------।।
यार मुझसे सवाल यह करते हैं।
हाल मेरे अपनों का वो पूछते हैं।।
क्यों नहीं जाता मिलने मैं उनसे।
लेकिन चाहते नहीं मिलना वो
मुझसे।।(मिलना वो मुझसे)
कब उनको कहा----------।।
वो नहीं चाहते मेरी शक्ल को देखना।
जिंदगी मेरी कामयाब और खुश देखना।।
सबसे कहते हैं मतलब उनको मुझसे नहीं।
इसीलिए खैरो- खबर मेरी वो पूछते
नहीं।।(वो पूछते नहीं)
कब उनको कहा----------।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद
तहसील एवं जिला- बारां(राजस्थान)

दुआएँ महँगी पड़ती हैं

माता-पिता का मान करो, यही जीवन का
सार,
इनके चरणों में बसता है सारा जग-संसार।
जीते-जी जो भूल गए, बाद में पछताओगे,
इनके जाने के बाद दुआएँ अनमोल हो
जाएँगी।
जिन उँगलियों ने थामकर चलना हमें
सिखाया,
हर गिरते कदम पर जिन्होंने गले से लगाया।
आज वही हाथ काँपते हैं, उनसे मुँह न मोड़ो,
सेवा और प्रेम की गंगा उनके आँगन में
छोड़ो।
रात-रात भर जागी माँ, लोरी गाकर सुलाया,
पिता ने पसीना बहाकर खुशियों के बीज
उगाया।
अपने सपनों का दीप बुझाकर तुममें उजाला
किया,
अपने हिस्से की खुशियाँ भी तुम पर ही वार
दिया।
धूप में तपते रहे पिता, बनकर शीतल छाया,
माँ ने आँसू पीकर भी होंठों पर सुख
सजाया।
उनके त्याग का मोल भला कौन चुका
पाएगा,
समय निकल जाए तो बस मन ही
पछताएगा।
जब तक सिर पर हाथ है उनका, भाग्य
तुम्हारा जागे,
घर-आँगन में प्रेम के, जीवन में सब फागे।
दो मीठे बोल कह दो, उनका दिल खुश हो
जाए,
जीते-जी उनके चरणों में शीश झुका जाए।
एक दिन आएगा ऐसा, घर खामोश हो
जाएगा,
'माँ' कहोगे तो कोई उत्तर न दे पाएगा।
पिता की खाली कुर्सी हर पल याद
दिलाएगी,
ममता तस्वीरों में रहकर आँसू बन जाएगी।
लाख पुकारो लौटेंगे नहीं वो बीते हुए पल,
रो-रोकर भी न भर पाओगे जीवन का ये
खल।
इससे पहले गले लग जाओ, सारे गिले भुला
दो,
सेवा, श्रद्धा, प्रेम के फूलों से उनका मन
महका दो।
माता-पिता ही साक्षात प्रभु का अनुपम
वरदान,
इनसे बड़ा जग में कोई नहीं दूसरा सम्मान।
इनके रहते हर दिन घर में त्योहार मनता है,
इनके आशीषों से ही जीवन का बाग
खनकता है।
माता-पिता का मान करो, यही सच्चा
उपकार,
इनके बाद दुआएँ होती हैं जग में सबसे
दुश्वार।
जिसके सिर पर हाथ रहे माता-पिता
महान,
वही इस दुनिया में सच्चा, वही सबसे
धनवान।

नेहा
कुमारी

मिहनत-मंजूरी के करइया

मिहनत-मंजूरी करइया के, हथेली हर चिन्हारी होथे
हथेली,गोड़ म फोरा,अउ माथा म पसीना कारी होथे
माटी के सेवा करइया, ए धरती म मंजूरी के करइया
रतन-बेटा किसान मन ही जन-जन के संगवारी होथे।
माटी के मान करइया बर, ए माटी हर महतारी होथे
खुन-पसीना के बोहइया मन, इहाँ जबड़ भारी होथे
लांघन पेट रही के दूसर बर, दिन भर काम करइया
जन-जन का भूख मिटइया,सब्बो के दुखहारी होथे।
मिहनत-मंजूरी करइया ल, जग के जिम्मेदारी होथे
दिन भरके जांगर टोरइया,एमन के दुनियादारी होथे
दुनिया के संसो करइया, सुख-दुख म संग देवइया
जन-जन ल भगवान मनइया, इही
मन पूजारी होथे।

अशोक पटेल
तुम्मा,शिवरिनारायन
9827874578

जाति का कुत्सित विचार

एक खौफनाक जुर्म,चीखें हवा में तैर गईं
पर शहर की गलियों में सन्नाटा नहीं
एक सुगबुगाहट फैली
लोग घरों से निकले,हाथों में तख्तियां लेकर
पर उन पर इंसाफ की मांग नहीं थी
उन पर लिखा था एक उपनाम
यह अजीब अंधापन है
कि लहू का रंग लाल नहीं दिखता।
पीड़िता का आंसू पानी लगता है
और दरिंदे के माथे पर
चमकने लगता है बिरादरी का तिलक
न्याय की तराजू को झुकाते हुए
तर्क दिए जाते हैं,रैलियां निकाली जाती हैं
एक बलात्कारी, एक कातिल के पक्ष में
सिर्फ इसलिए
कि उसकी रगों में बहता है वही खून
जो उस भीड़ की रगों में है
सोचिए,विचार कीजिए,हम कहाँ आ पहुंचे हैं?
जहाँ पाप का कोई धर्म नहीं होता था
वहाँ अब गुनाह का भी जाति तय होता है।
जब तक जुर्म और संवेदनाओं पर
यह जातीय मुखौटा चढ़ा रहेगा
अदालतें सिर्फ पत्थर की इमारतें रहेंगी
और इंसानियत
रोज किसी चौराहे पर दम तोड़ती रहेगी।।

चन्द्रकांत खुंटे क्रांति
जांजगीर-चाम्पा
(छत्तीसगढ़)

ईश्वर-अल्लाह,तेरा हर पल शुकराना

हर पल का शुकराना,हर साँस का शुकराना
तेरी दी हर धड़कन,हर आस का शुकराना।
सूनी राहों में भी तूने उजियारा भर डाला
ऐ मेरे ईश्वर-अल्लाह,तेरे हर एहसास का
शुकराना।
गिरने से पहले तूने मेरा हाथ थाम लिया
भटके हुए कदमों को अपना नाम दिया।
बेगानों की दुनियाँ में भी अपना बना लिया,
तेरी हर रहमत,हर करम का शुकराना किया।
अंग-संग रहकर तूने हर डर को दूर किया
आँधियों के बीच भी जीवन को नूर किया।
हर दुःख की धूप में दया की छाँव बिछा दी
तेरी हर मेहरबानी का दिल से शुकराना किया।
जब-जब सिर पर तेरी रहमत का हाथ आया,
टूटा हुआ विश्वास भी फिर से मुस्कुराया।
आँसू भी इबादत बने,सजदे भी मुस्काए
तेरे हर फ़ैसले को मैंने दिल से अपनाया।
न धन का शुकराना,न शोहरत का अफ़साना
बस तेरी रज़ा में ही है मेरा ठिकाना।
किशन,आखिरी साँस तक बस इतनी सी दुआ रहे,
ईश्वर-अल्लाह,तेरा हर पल..हर साँस..हर जन्म शुकराना।

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र 9226229318

ओके होयोड़ा! सविनय अर्जी बाकी आपकी मर्जी

एक प्राथना तुम से, मुझको अपनालो या ठुकराना
नौकर रख लो अपने दर का, करूंगा तेरा बौल्ला
जब जब मैंने हाथ पसारे, तूने हाथ बढ़ाया है
तूने मेरी राह बनाई रास्ता तूने दिखाया है,
मैं चला तो साथ मेरे, तू चल पड़ा मेरे सरकार
घेरा मुझको दुखो ने जब, पास खड़ा तू पाया है
रोया मैं जब मेरे संवारे, तूने ही तो हंसाया है
कैसे भूलू ओके होयोडा तेरे, मुझपे है इतने उपकार
पड़ा रहूंगा चौखट तेरी, करता रहूंगा मैं दीदार
मैं हूं तेरा ऐसा भिखारी ,पड़ा रहू बस तेरे द्वार
संसार रूपी रथ में लगाम बहुत है..
उम्र कम है और इम्तिहान बहुत है..
जरूरत नहीं है अब झूठे रिश्तों की..
मेरा साथ निभाने को श्याम बहुत है।
ओके होयोड़ा! सविनय अर्जी, बाकी आपकी मर्जी
एक प्राथना तुम से, मुझको अपनालो या ठुकराना
नौकर रख लो अपने दर का, करूंगा तेरा बौल्ला
जब जब मैंने हाथ पसारे, तूने हाथ बढ़ाया है
तूने मेरी राह बनाई रास्ता तूने दिखाया है,
मैं चला तो साथ मेरे, तू चल पड़ा मेरे सरकार
घेरा मुझको दुखो ने जब, पास खड़ा तू पाया है
रोया मैं जब मेरे संवारे, तूने ही तो हंसाया है
कैसे भूलू ओके होयोडा तेरे, मुझपे है इतने उपकार
पड़ा रहूंगा चौखट तेरी, करता रहूंगा मैं दीदार
मैं हूं तेरा ऐसा भिखारी ,पड़ा रहू बस तेरे द्वार
संसार रूपी रथ में लगाम बहुत है..
उम्र कम है और इम्तिहान बहुत है..
जरूरत नहीं है अब झूठे रिश्तों की..
मेरा साथ निभाने को श्याम बहुत है।
रावत गर्ग उण्डू 'राज'

श्री गर्गवास राजबेरा, उण्डू, बाड़मेर, राजस्थान।श्री गर्गवास राजबेरा, उण्डू, बाड़मेर, राजस्थान।

सफ़र सिर्फ़ मंजिल तक पहुँचने का नाम नहीं,

यह तो हर क़दम पर खुद से मिलने का पैग़ाम है।
राहों की धूल में जो ख़्वाब चमकते हैं,
वही जीवन का सबसे अनमोल इनाम है।
चल पड़े थे कभी हम भी
कुछ अधूरी-सी ख़्वाहिशें लेकर,
कुछ उम्मीदों की गठरी बाँधे,
कुछ अपनों की दुआएँ लेकर।
रास्तों ने बहुत कुछ सिखाया,
धूप ने धैर्य का अर्थ बताया,
बारिशों ने मन को धो डाला,
आँधियों ने हौसला जगाया।
कभी कोई हमसफ़र मिला,
जिसने कुछ दूर साथ
निभाया,
फिर किसी मोड़ पर चुपके से
अपना रास्ता अलग बनाया।
कुछ चेहरे यादों में बस गए,
कुछ नाम हवा के संग खो गए,
कुछ रिश्ते मौसम जैसे निकले,
कुछ उम्र भर दिल में बो गए।
सफ़र ने यह भी समझाया–
हर ठहराव अंत नहीं होता,
हर बिछड़ना हार नहीं होता,
हर आँसू दुख का प्रमाण नहीं होता।
कभी पाँव में छाले पड़े,
कभी कंधों पर बोझ बढ़ा,
पर भीतर बैठा विश्वास
हर बार मुझसे यही कहता रहा–
चलते रहो...
क्योंकि ठहरा हुआ पानी
अपनी पहचान खो देता है,
और चलता हुआ दरिया
समंदर बन जाता है।
सफ़र में मंज़िलें बदलती रहीं,
इंसान भी बदलते रहे,
पर जो नहीं बदला,
वह था उम्मीद का छोटा-सा दीप,
जो हर अँधेरे में
धीरे-धीरे मुस्कुराता रहा।
अब समझ आया है–
जीत केवल शिखर पर खड़े होने में नहीं,
बल्कि हर गिरकर उठने में है।
सफलता केवल तालियों में नहीं,
बल्कि अपने विवेक की आवाज़ सुनने में है।
एक दिन यह सफ़र भी थम जाएगा,
कदमों की आहट मौन हो जाएगी,
पर यदि राहों पर प्रेम के कुछ फूल बिखेर गए,
यदि किसी की आँखों में उम्मीद जगा गए,
यदि किसी थके मुसाफ़िर को
दो पल का विश्वास दे गए–
तो समझना,
मंज़िल से भी सुंदर था यह सफ़र।
क्योंकि जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई यही है–
हम सब मुसाफ़िर हैं,
कोई पहले उतर जाता है,
कोई बाद में।
पर याद वही रहता है
जिसने रास्तों को आसान बनाया,
जिसने अँधेरों में दीप जलाए,
और जिसने अपने सफ़र को
सिर्फ़ अपना नहीं,
दूसरों की मुस्कान का कारण भी बनाया।
आओ, चलते रहें...
बिना शिकायत, बिना अहंकार,
हर मोड़ को स्वीकार करते हुए,
हर अनुभव को प्रणाम करते हुए।
क्योंकि मंज़िलें अक्सर खत्म हो जाती हैं,
लेकिन सच्चे अर्थों में
सफ़र कभी समाप्त नहीं होता।

मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर

कई बार लगता है

कई बार लगता है,
क्या अब अपनी जीत का फ़साना कहना
सही होगा,
फिर अगले ही पल
कोई मुझे ढूँढ़ता हुआ चला आता है।
जब अपनी ही कहानी,
लोगों की ज़ुबान से सुनती हूँ,
तब अपने सफ़र का
असली अंदाज़ा होता है।
ऐसा नहीं कि मुझे कहने में संकोच है,
पर लोगों के शब्दों में
अपनी मेहनत का रंग देखना,
एक अलग ही एहसास होता है।
जो सफ़र खुद के लिखने से शुरू हुआ
था,
खुद को समझने से शुरू हुआ था।
कब मेरी कहानी
औरों की कहानी बन गई,
पता ही नहीं चला।
लोग मुझमें खुद को ढूँढ़ने लगे,
अपनी दबी हुई आवाज़ को
बाहर रखने लगे।
ऐसा नहीं है कि
यह एक रात का कमाल था,
कई हारों के बाद
मुकम्मल हुआ यह सपना था।
शायद इसलिए....
अपने मन की बात को रखना था,
लोगों को थोड़ा–बहुत समझाना था।
खुद के साथ हो चुकी चीज़ों को,
किसी और के साथ न हो,
बस यही बताना था।
अब भी सफ़र
अपने मुकाम पर नहीं पहुँचा है,
पर कर्म का सफ़र
अभी भी जारी है।
वह जो जीत का सपना था,
जो खुली आँखों ने देखा था।
जब लोग कहते हैं,
'तुम्हारे लिखे हुए से प्रेरणा मिलती है,
'जब मेरी ही बात
उनके मन को छूती है,
तब मुझे
अपने सफ़र का अंदाज़ा होता है।
फिर लगता है,
मेरा लिखा सार्थक हो चला है।
पर सफ़र अभी बाकी है...
कल फिर एक नया पन्ना लिखा जाएगा,
शायद किसी और की कहानी में
मेरी कहानी का एक हिस्सा जुड़ जाएगा।

अनुपमा आर्य
आगरा उत्तर
प्रदेश

मेरे अंदर

मेरे अंदर
एक तूफान है
झकझोरता रहता मुझे
हरदम

मेरे अंदर
एक पेड़ है
आकाश छूने को
मचलता रहता है
हरदम

मेरे अंदर
एक आग है
धधकती रहती है
हरदम
मेरे अंदर
एक सूरज है

अंधेरे से लड़ता रहता है
हरदम मेरे अंदर
एक स्त्री भी है
जो मेरे जीवन को
सुन्दर बनाती रहती है
हरदम

दुर्गाप्रसाद झाला

रोना उतना कठिन नहीं,

कठिन है अश्रुओं को
नेत्रों की देहरी पर ही ठहरा देना।
कठिन है हृदय में उमड़ते
वेदना के अथाह सागर को
मौन के छोटे से पात्र में समेट लेना।
अश्रु बह जाएँ तो
मन का बोझ कुछ हल्का हो जाता है,
किन्तु जो पीड़ा भीतर ही भीतर
नि:शब्द जलती रहती है,
वही प्रत्येक मुस्कान के पीछे
एक अनलिखी व्यथा का इतिहास लिखती है।
रोना उतना कठिन नहीं,
कठिन है हर प्रभात

अपने ही टूटे हुए मन को समझाना,
और संध्या तक
चेहरे पर सहज मुस्कान का दीप जलाए
रखना।
कठिन है उन स्मृतियों के साथ जीना
जो हर साँस के साथ
हृदय में एक नया घाव खोलती रहें,

और फिर भी
संसार के सम्मुख
स्वयं को पूर्ण, प्रसन्न और अडिग दिखाना।
कठिन है उस मौन को ढोना
जिसे कोई सुन नहीं सकता,
उस पीड़ा को जीना
जिसे कोई देख नहीं सकता,
और उन प्रश्नों के साथ सो जाना

जिनके उत्तर समय के पास भी नहीं होते।
और उससे भी अधिक कठिन है
उस हृदय के साथ जीवित रहना
जो असंख्य बार टूटने के उपरान्त भी
प्रेम पर विश्वास करना नहीं छोड़ता,
अपनत्व की प्रतीक्षा करना नहीं भूलता,
और प्रत्येक आघात के बाद भी
किसी स्नेहिल स्पर्श की संभावना बचाए रखता
है।
मनुष्य को आँसू नहीं थकाते,
उसे थका देती है वे परिस्थितियाँ
जहाँ पीड़ा व्यक्त करने का भी अधिकार न हो,
जहाँ मौन ही उसकी नियति बन जाए,
और मुस्कान
उसके दु:ख का सबसे विश्वसनीय आवरण
बनकर रह जाए।
रोना उतना कठिन नहीं,
कठिन तो यह है कि

भीतर प्रतिदिन थोड़ा–थोड़ा बिखरते हुए भी
बाहर जीवन को उसी गरिमा से जीना,
हर टूटन के बाद
स्वयं को फिर से समेट लेना,
हर विश्वासघात के बाद भी
विश्वास को मरने न देना,
हर अस्वीकार के बाद भी

करुणा को जीवित रखना,
और प्रेम से घायल होकर भी
प्रेम करना न छोड़ना।
क्योंकि मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति
उसका कभी न रोना नहीं,
बल्कि हर बार टूटकर भी
अपने भीतर बची हुई रोशनी को
जीवित रख लेना है।

सोनिका
शुक्ला
रीवा
मध्यप्रदेश

कवि का संसार

कविताओं के आसपास ही
तो कवि का संसार होता है ।
हर प्रकार की कविताएं लिखकर
कवि हमेशा ही खुश रहता है ।
साहित्य में उपलब्धियां मिले
हम सब ही खुशी मनाते हैं ।
आपस में एक दूसरे के साथ
सभी मिलकर खुश होते हैं ।
बूढ़े बच्चे महिला ज़बान को
उपलब्धियां हासिल जब होती हैं।
मन खुशियों से भर जाता है
उत्साह जीवन में बढ़ जाता है ।
आगे भी उपलब्धि हासिल हो
मन में उत्साह भी बढ़ता है ।
हौसला कोई बढ़ाता है तो
उत्साह और भी बढ़ जाता है ।
माता पिता घर परिवार का
नाम भी रोशन हो जाता है।
गांव शहर प्रदेश के साथ ही
देश का नाम भी रोशन होता है।
मेरा हाल भी कुछ ऐसा ही है
साहित्य की सेवा करता हूं ।
साहित्य के मंचों में रोज ही
कविताओं को भेजता रहता हूं।
आन लाइन कवि सम्मेलन होते
उनमें भी हिस्सा लेता रहता हूं।
सम्मान भी वहां से मिलते हैं
नई उपलब्धि हासिल करता हूं ।
विषय आधारित प्रतियोगिता में
अक्सर मंचों में हिस्सा लेता हूं ।
प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान भी
तियोगिता में पाता रहता हूं ।
चार छः कविताएं भी पेपर में
हफ्ते में प्रकाशित होती रहती हैं ।
उपलब्धियां पेपर में छप जाएं
हौसला बढ़ता खुशी भी होती है ।
प्रकाशित कविता सम्मानों को
मंचों में डालो आपत्ति करते हैं ।
सम्मानों को कागज का टुकड़ा
कहकर ईर्षा और जलन रखते हैं ।
(120) माह में
अब तक मुझको
(8535) टोटल सम्मान
मिले हैं ।
(8295) कविताएं
भी लिखी है
(2132) सम्मान
वर्ष 2026 में मिलें हैं।
(80) कविताएं
अमेरिका के पेपर
हम हिन्दुस्तानी में प्रकाशित हुई हैं
।
1985 से मेरी
कविताएं देश विदेश के
पेपर पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही
है
(2022) से अभी
तक रोज सम्मान
मिले कविता प्रकाशित
हो रही हैं ।
(8530) सम्मानों के भी मैंने
प्रिंट निकाल कर रखें
हुए हैं ।
16/18 घंटे रोज
ही मैं तो
साहित्य की सेवा कर रहा हूं ।
रेलवे की नौकरी से रिटायर होकर
यही काम अब कर रहा हूं ।
1970 से साहित्य
सफर शुरू हुआ है
सबसे पहले उपन्यास लिखा था ।
गीत कविता कहानी और व्यंग्य
लिखे
1984 से पेपरों
कविता प्रकाशित हुई।
45 वर्ष बाद
मुझे पहला सम्मान 2017
में जबलपुर विश्वविद्यालय में
मिला
है ।
उसके बाद सम्मान मिलने का
सफर
नियमित रूप से आज भी जारी है
।
(4364) कविताएं मेरी देश
विदेश के पेपरों में प्रकाशित हुई।
रस छंद अलंकारों का मेल नहीं
है
मन के भाव से सरल कविता
लिखते हैं ।
(6) काव्य
संग्रह प्रकाशित हुए दो सौ
से ज्यादा साझा काव्य संग्रह छपे
हैं।
कई सैकड़ों मंचों की बेवसाइट के
लिंक में कविताएं प्रकाशित हुई हैं
।
(22) बार वर्ल्ड
रिकार्ड में भी
कविता और मेरा नाम दर्ज हुआ है
जुलाई 2019 में दूरदर्शन भोपाल
में
मेरी कविताओं का प्रसारण हुआ है
देश विदेश के (42) विश्व
विद्यालयों
की संगोष्ठियों में हिस्सा भी लिया
है
संगोष्ठियों में हिस्सा लेने पर वहां
से
सर्टिफिकेट भी मुझे प्राप्त हुए हैं ।
मेरे काव्य संग्रह (घर परिवार) का
(विकी वर्ल्ड
रिकार्ड) में नाम दर्ज है ।
(400) घंटे लगातार
बुलंदी मंच में
मैंने भी काव्य काव्य पाठ किया है
।
10 से 19
फरवरी 2024 को
(55) देशों
का कवि सम्मेलन हुआ।
हावर्ड वर्ल्ड रिकार्ड लंदन में नाम
दर्ज हुआ सम्मान पत्र भी मिला ।
साहित्य मंचों की प्रतियोगिताओं में
मेरी 1140 कविताओं को प्रथम ,
द्वितीय तृतीय एवं शीर्ष दस स्थानों
में भी कविताओं को स्थान मिला
है
सुनहरा कल मेरी साहित्य संस्था ने
50/कवियों
को निशुल्क सम्मान दिए हैं ।
अपमान सहे लोगों से ताने भी सुने
ये सब सहकर इस मंजिल को
पाए है।
लंदन, यू एस ए विकी वर्ल्ड
इंडिया बुक
एशिया बुक लिम्का गोल्डन
बुक टारगेट
बुक हाई रेंज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड
इत्यादि
वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में मेरा नाम दर्ज
हुआ है।
महाकवि डाक्ट्रेट, आचार्य
साहित्य
सम्राट की उपाधि मुझे मिली है ।
विद्या वाचस्पति की उपाधि भी
कविताओं के संसार से ही मिली
है ।

डा अनन्तराम
चौबे
अनन्त जबलपुर

हरे पेड़ सब भग्न हो रहे, होगा क्या परिणाम रे

हरे पेड़ सब भग्न हो रहे, होगा क्या परिणाम रे।
प्राणवायु भी दूषित हो गए, सोच मनुज अंजाम रे।।
क्षरण हो रहे नित-नित देखो,कलरव करते खग
सखा।
पंछी बेकल खोज रहे हैं;नीड़ कहाँ है अब रखा।।
लगता है साँस है भारी, मिलता नहीं सुकून रे।
हरे पेड़ सब भग्न हो रहे, होगा क्या परिणाम रे।
छत पर बैठा देख रहा है,मालिक कटते डाल को।
सोच तनिक क्या सह पायेगा,ईंटों की जंजाल को।।
घुट जायेगी इक दिन साँसे,उठा चेतना भान रे।
हरे पेड़ सब भग्न हो रहे, होगा क्या परिणाम रे।।
हरियाली है जीवन धारा,हरियाली आधार है।
पेड़ लगाओ धरा बचाओ,यही जिंदगी सार है।।
सांस बिना क्या वैभव होगा,त्याग सभी अभिमान रे।
हरे पेड़ सब भग्न हो रहे, होगा क्या परिणाम रे।।

रिंकु दुबे वैष्णवी धनबाद झारखंड

सुकून के दोहे

पीपल की उस छाँव में, बैठा था इक बार।
मन मेरा निर्मल हुआ, पाया चैन अपार।।
जंगल की उस राह में, कितने खिले प्रसून।
लेकर मंद सुगंध को, मिलता मुझे सुकून।।
हुई वर्षा उस दौर में, बोले दादुर मोर।
सोंधी खुशबू आ गई,मैं तो भाव विभोर।।
प्रकृति की इस गोद में, सपनों का संसार।
हृदय समाया चैन था, भूल गया जग भार।।
शिकवा शिकायत न रही, प्रेम मिला भरपूर।
सुकून ऐसा यह मिला, हुआ आज मशहूर।।

शिवलाल दाँगी अध्यापक मोबा.8435408794